ISSN 097-6459

शोध-संप्रेषण

SHODH-SAMPRESHAN

International Peer Reviewed Refereed Research Journal

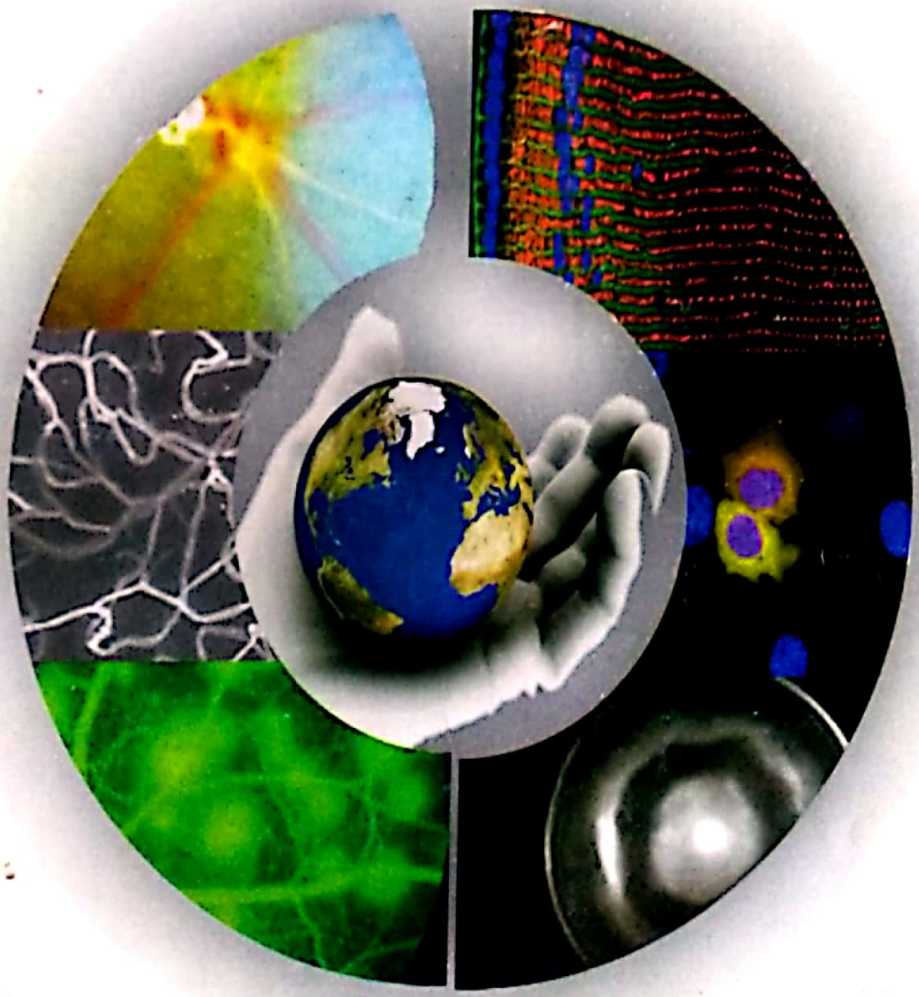

RRDC
Research & Research Development Centre
Research Journal
Conferences
Seminars
International Events

शोध एवं अनुसंधान के लिए समर्पित अंतरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल

International Research Journal for Research & Research Activities

Scanned with CamScanner

शोध-संप्रेषण

त्रैमासिक अंतरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल

अंक : 12 वर्ष : 4 संख्या : 2 अप्रैल-जून, 2015

अनुक्रमणिका

1	RUHI FATIMA & MANISHA DWIVEDI - RABINDRANATH TAGORE'S "THE POST OFFICE" : A THEMATIC STUDY	Ruhi Fatima, Manisha Dwivedi	3
2	REGULATION OF CORPORATE RECONSTRUCTION	Dwijendra Nath Thakur	6
3	NEW GRACE OF GOD IN INDIAN FICTION AND INDIAN TELEVISION	Ms. Shraddha Sharma, Dr. Samir Thakur	15
4	ROLE OF JUDICIAL REVIEW IN IMPLEMENTING INTERNATIONAL HUMAN RIGHTS NORMS	Dwijendra Nath Thakur	17
5	पुनपुरुष : डॉ. विनय कुमार पाठक	आशा यादव, डॉ. सुनीता मिश्रा,	25
6	दलित विमर्श : एक आत्मीय चिंतन	दिलीप कुमार खरे, डॉ. अंजनी पाठक	27
7	स्त्री चिंतन	कु. दिव्या सिंह राठौर, डॉ. सुनीता मिश्रा	29
8	राष्ट्रीय जागरण में छत्तीसगढ़ के साहित्यकारों का योगदान	श्रीमती मंजू साहू, डॉ. दीपक कुमार पाठक	31
9	स्त्री-विमर्श का स्वरूप	नम्रता शुक्ला, डॉ. अंजनी पाठक,	35
10	बदलते परिवेश में नारी का स्वरूप	राजश्री, डॉ० अंजनी पाठक	38
11	वर्तमान हिन्दी – एक परिचय	कु. संध्या कश्यप, डॉ. सुनीता मिश्रा	42
12	आधुनिक सभ्यता के समक्ष साहित्यिक एवं भाषायी चुनौतियाँ	शिवांगनी परिहार, डॉ.अंजनी पाठक,	44
13	मन्नु भंडारी की कहानियों में स्त्री की अवधारणा	सत्येन्द्र नाथ प्रताप सिंह, डा. सुनीता मिश्रा,	46
14	अग्नि एवं पर्यावरण	रोहित कुमार शर्मा, डॉ वेदप्रकाश मिश्र	48
15	देवी की उपासना विधि	हेमत कुमार शुक्ल,डॉ वेदप्रकाश मिश्र	51
16	वैदिक काल में शिक्षा एवं समाज का उदार स्वरूप	नीलेश कुमार तिवारी, डॉ.वेदप्रकाश मिश्र	54
17	स्त्री शिक्षा पर चिंतन	संदीप सिंह, डॉ.अंजनी पाठक	59
18	महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना	झरना साव डॉ.अशोक कुमार उपाध्याय	61

Scanned with CamScanner

ISSN 097-6459

राष्ट्रीय जागरण में छत्तीसगढ़ के साहित्यकारों का योगदान

श्रीमती मंजू साहू
एम.फिल. इतिहास
डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय
कोटा बिलासपुर (छ.ग.)
डॉ. दीपक कुमार पाठक
सहायक प्राध्यापक इतिहास
शासकीय डी.एम.डी. कॉलेज
बिलासपुर (छ.ग.)

छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय जागरण के उदय व विकास में विभिन्न विद्वानों विभिन्न साहित्यकारों तथा पत्र-पत्रिकाओं आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राष्ट्रीय जागरण में साहित्यकारों ने योगदान दिया है उसका विवरण निम्नानुसार है :-

1. पं. सुंदर लाल शर्मा –

छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय जागरण के अग्रदूत पं. सुंदर लाल शर्मा माने जाते हैं। इनका जन्म राजिम के निकट चंद्रसूर (चमसुर) के एक ब्राम्हण परिवार में हुआ था। इनके पिता जियालाल तिवारी कांकेर रियासत में वकालत का कार्य करते थे। पं. सुंदरलाल शर्मा बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे एक ही साथ साहित्यकार, मूर्तिकार, चित्रकार, शिक्षाविद्, स्वतंत्रता सेनानी व समाज सुधारक थे पर उनकी प्रसिद्धि मुख्यतः स्वतंत्रता सेनानी साहित्यकार तथा अछूतोद्धारक के रूप में है। वे 1905 ई. के बंग-भंग विरोधी आंदोलन के दौरान राजनीति से जुड़े। वे वर्ष 1906 ई. में कांग्रेस के सदस्य बने और जीवन पर्यंत कांग्रेसी बने रहे। वे वर्ष 1907 ई. के सूरत अधिवेशन में शामिल हुए और वहां से लौटकर रायपुर में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और स्वदेशी वस्तुओं के अंगीकार के प्रचार-प्रसार में जुट गए। वर्ष 1907 ई. में ही उन्होंने राजिम में संस्कृत पाठशाला की स्थापना की। पं. सुंदरलाल शर्मा ने वर्ष 1920 ई. के कण्डेल नहर सत्याग्रह (धमतरी तहसील) के सूत्रधार की भूमिका निभाई। पं. सुंदर लाल शर्मा के आग्रह पर ही गांधी जी अपनी प्रथम छत्तीसगढ़ यात्रा पर आए। पं. सुंदरलाल शर्मा वर्ष 1922 ई. के सिहावा-नगरी के वन सत्याग्रह में सूत्रधार की भूमिका निभाई। इसी क्रम में उन्हें वन कानून की अवहेलना के आरोप में गिरफ्तार किया गया और उन्हें डेढ़ वर्ष का सश्रम कारावास दिया गया। जेल से वापस आते ही उन्होंने अछुतों को स्वच्छता से रहने, जनेऊ धारण करने तथा शराब न पीने के लिए प्रेरित किया। उपं. सुंदर लाल शर्मा के प्रयासों से रायपुर में सतनामी आश्रम, हरिजन, पुत्रीशाला एवं वाचनालय स्थापित हुए। उन्होंने निष्कासित हिन्दुओं के लिए शुद्धिकरण आंदोलन भी चलाया। वे मंदिरों में हरिजनों के प्रवेश के समर्थक थे और अपने नैतिक बल के आधार पर ही उन्होंने राजिम के मंदिर में हरिजन के प्रवेश को उस युग में संभव कर दिखाया। इसीलिए गांधी जी जब 1933 ई. में छत्तीसगढ़ की यात्रा पर दूसरी बार आए तो उन्होंने पंडित सुंदर लाल शर्मा के अछुतोद्धार कार्यक्रम की प्रशंसा की और उन्हें इस मामले में अपना अग्रज या गुरू कहकर सम्बोधित किया। सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-34) के दौरान उन्हें 20 अप्रैल 1932 ई. को गिरफ्तार किया गया। पंडित सुंदरलाल शर्मा ने कई साहित्यों की रचना की जिनमें 'प्रहलाद चरित्र' 'करूणा पचीसी' और 'सतनामी भजनमाला' उल्लेखनीय है। इसके साथ ही उनकी 'दानलीला' छत्तीसगढ़ी काव्य की एक राष्ट्रीय जागरण काव्य कृति है। अपने जीवनकाल में पंडित सुंदर लाल शर्मा ने काव्य ग्रंथ, नाटक, जीवनी और उपन्यास की रचना की। इन्होंने छत्तीसगढ़ में राजनीतिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक चेतना की जागृति के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया है। उनका साहित्यिक अवदान भी उल्लेखनीय है। इस तरह से राष्ट्रीय जागरण में छत्तीसगढ़ ने इस सपूत को 'युग प्रवर्तक' साहित्यकार माना गया है।'

> पं. सुंदरलाल शर्मा वर्ष 1922 ई. के सिहावा नगरी के वन सत्याग्रह में सूत्रधार की भूमिका निभाई। इसी क्रम में उन्हें वन कानून की अवहेलना के आरोप में गिरफ्तार किया गया और उन्हें डेढ़ वर्ष का सश्रम कारावास दिया गया। जेल से वापस आते ही उन्होंने अछुतों को स्वच्छता से रहने, जनेऊ धारण करने तथा शराब न पीने के लिए प्रेरित किया।

2. माधव प्रसाद सप्रे –

इनका जन्म जिला दमोह ग्राम पथरिया में हुआ था। माधव राव सप्रे रायपुर

Received : 18 March, 2015 Reviewed : 5April,2015 Accepted : 19 April, 2015

Scanned with CamScanner

से 1900 ई. से प्रकाशित होने वाले पत्र 'छत्तीसगढ़ मित्र' के संपादक थे। यह छत्तीसगढ़ अंचल का प्रथम पत्र था। वर्ष 1900 ई. में उनकी प्रेरणा से 'आनंद समाज वाचनालय' की स्थापना हुई। वर्ष 1907 ई. में रायपुर में आयोजित तृतीय प्रांतीय राजनीतिक परिषद में 'हिन्दी केसरी' नामक पत्रिका निकालने का दायित्व सप्रे जी को सौंपा गया और 13 अप्रैल 1907 ई. में इनका प्रकाशन आरंभ हुआ। ब्रिटिश शासन के विरोध में 'हिन्दी केसरी' में प्रकाशित लेखों 'देश की दुर्दशा' एवं 'बम बोले का रहस्य' के कारण सप्रे जी को 21 अगस्त 1908 ई. को गिरफ्तार कर लिया गया। सरकार के समक्ष माफीनामा पेश करने के फलस्वरूप उन्हें 2 नवम्बर, 1908 ई. को जेल से रिहा कर दिया गया। सप्रे जी ने बाल गंगाधर तिलक के ग्रंथ 'गीता रहस्य' (मराठी) का हिन्दी में अनुवाद किया।

माधव प्रसाद सप्रे जी ने अपने विभिन्न साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीय जागरण में भूमि निभाई है।[2]

3. पं0 वामनराव लाखे–

वामनराव लाखे का जन्म दिनांक 17–9–1872 को रायपुर में हुआ था। उनके पिता का नाम बलीराम गोविंद लाखें था। बलीराम अत्यंत सामान्य स्थिति के थे किन्तु कठोर परिश्रम किया, धन अर्जित किया और कुछ गांव भी खरीद लिये । बलीराम जी अपने पुत्र वामनराव की शिक्षा पर विशेंश ध्यान दिया और उन्हें उच्च शिक्षा के लिये प्रोत्साहित किया।

सन् 1904 में लाखेंजी ने कानून की परीक्षा पास कर रायपुर मे वकालत शुरू की। 'छत्तीसगढ़ मित्र' के माध्यम से से सार्वजनिक जीवन में प्रवेश कर चुके थे। वकालत करते हुए उन्होंने धन अर्जन से अधिक जनसेवा की ओर ध्यान दिया । वकालत के व्यसाय में भी उन्होंने पर्याप्त यश अर्जित किया। वे कई बार बूढ़ापारा वार्ड से नगर पालिका रायपुर के सदस्य निर्वाचित हुए। बाद में वे रायपुर नगरपालिका के दो बार अध्यक्ष भी निर्वाचित हुए।

सन् 1913 में लाखेजी के प्रयासों से रायपुर में रायपुर को–आपरेटिव्ह सेन्ट्रल बैंक की स्थापना हुई। कृषकों को साहूकारों के चंगुल से मुक्त कर सहकारी सिद्धांतो के आधार पर संगठित कर उन्हें आर्थिक सहायता पहुंचाने का रायपुर जिलें में यह प्रथम प्रयास था। आज यह संस्था इस क्षेत्र की प्रमुख संस्था है और इस हजारों व्यक्तियों को रोजगार मिला है तथा लाखों किसानों को यह संस्था आर्थिक मदद पहुंचा रही है। लाखेंजी इस संस्था के संस्थापक थें। उनकी प्रतिमा बैंक के प्रांगण में स्थित है। लाखेजी इस संस्था के जन्म काल से सन् 1936 तक मंत्री तथा सन् 1937 से 1948 तक इस संस्था के अध्यक्ष रहें। इस प्रकार सन् 35 वर्ष तक लाखेजी ने अपने कठोर परिश्रम और अटूट निश्ठा के साथ इसकी अमूल्य सेवा की ।

सन् 1916 में लाखेजी ने किसानों की जो सेवायें की जो सेवायें की, उससे प्रसन्न होकर अंग्रेजी शासन ने उन्हे रायसाहब की उपाधि से विभूषित किया।

सन्1920 के दिसम्बर माह के अंतिम सप्ताह में नागपुर में महात्मा गांधी ने असहोयग का प्रस्ताव रखा। इस नागपुर अधिवेंशन में लाखेंजी भी गये थे। वहां से लौटने के पश्चात वे स्वदेशी प्रचार तथा असहयोग आंदोलन में सक्रिय हो गये। गांधी चौक की एक–एक सभा में उन्होंने रायसाहब की पदवी त्याग देने की घोशणा करके ब्रिटिश हुकुमत से असहयोग की शुरूआत की। जनता ने उन्हें 'लोकप्रिय' की उपाधि से विभूषित किया।

सन् 1922 में रायपुर में जिला राजनीतिक परिशद् का आयोजन किया गया था। लाखेजी इस परिषद के प्रमुख आयोजकों में से थे। उसी वर्श लाखेजी रायपुर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। उन्होंने कांग्रेस संगठन को रायपुर जिलें में सुदृढ़ करने के लिए कठोर परिश्रम किया। सन् 1924 में लाखेजी ने कांग्रेस संगठन के भीतर छत्तीसगढ़ को पृथक प्रदेश का दर्जा देने की मांग की जो प्रांतीय कांग्रेस द्वारा अमान्य कर दिया गया।

रायपुर के स्वाधीनता आंदोलन के इतिहास में ये 'पंचो पाण्डव' के नाम विख्यात हैं। युधिष्ठिर का स्थान लाखेजी ने ग्रहण किया था। स्वाधीनता आंदोलन मे इसी से उनकी महत्वपुर्ण भूमिका स्पश्ट हो जाती है।

रायपुर जिले के कांग्रेस संगठन की नींव रखने वाले, राष्ट्रीय जागरण के पुरोधा के रूप में लाखेजी का स्थान सर्वोपरि है। वे इस जिलें में सहकारी आंदोलन के पितामह थे। उन्होंने सन् 1945 में बलौदाबाजार में किसान को–ऑपरेटिव्ह राइस मिल के स्थापना की। उन्होंने अपना सारा जीवन राष्ट्रीय आंदोलन तथा सहकारी संगठन में व्यतीत किया। वे त्याग, साहस और कर्मठता के जीवंत प्रतीक थे।[3]

4. व्याकरणाचार्य हीरालाल काव्योपाध्याय–

छत्तीसगढ़ का व्याकरण लिखकर और छत्तीसगढ़ को गौरव प्रदान करने वाले महापुरूष मुंशी हीरालाल काव्योपाध्याय के ऋण को छत्तीसगढ़ कभी नहीं चुका सकता। श्री प्यारेलाल जी गुप्त ने जिन छत्तीसगढ़ के सप्तर्शियों का उल्लेख किया है उनमें हीरालाल काव्योपाध्याय का प्रथम स्थान है। हीरालाल जी मात्र व्याकरणाचार्य ही नहीं थे अपितु सुकवि तथा अच्छे

Scanned with CamScanner

संगीतज्ञ भी थे।

मुंशी हीरालाल जी का जन्म सन् 1856 में रायपुर में एक सम्पन्न कुर्मी परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम बाबू दयाराम तथा माता का राम राधाबाई था। हीरालाल जी की आरंभिक शिक्षा रायपुर में ही हुई। रायपुर में मिडिल तथा अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् उन्होंने जबलपुर हाईस्कूल से सन् 1874 में मैट्रिक की परीक्षा पास की। वे अत्यंत मेधावी छात्र थे। अपने लाभ जीवन में उन्होंने अनेक पारितोषिक भी जीते।

सन् 1875 में वे सरकारी नौकरी में प्रवृश्ट हुए। साधारण शिक्षक के रूप में उन्होंने अपना जीवन आरंभ किया तथा अपनी योग्यता के कारण वे शीघ्र ही प्रधानाध्यापक के रूप में धमतरी अंग्रेजी मिडिल स्कूल में नियुक्त हुए। एक प्रकार से वे धमतरी में ही बस गये।

धमतरी में उन्होंने अपना सार्वजनिक जीवन आरंभ किया। अपनी सेवाओं तथा योग्यता के कारण धमतरी के नागरिकों में वे अत्यंत लोकप्रिय हो गये। धमतरी की जनता उन्हें अत्यंत आदर और स्नेह की दृष्टि से देखती थी। उनकी लोकप्रियता के प्रमाण स्वरूप वे धमतरी नगरपालिका के अध्यक्ष चुने गये। धमतरी में ही उन्होंने सन् 1885 में अपने प्रसिद्ध ग्रंथ छत्तीसगढ़ी व्याकरण की हिन्दी में रचना की। इस व्याकरण रचना में कृष्णायन महाकाव्य के रचयिता बिसाहू राम जी ने भी उन्हें सहयोग दिया था। छत्तीसगढ़ी का व्याकरण हीरालालजी ने उस समय लिखा जब खड़ी बोली को कोई अच्छा–सा व्याकरण उपलब्ध नहीं था। उनका यह ग्रंथ प्रसिद्ध भाषाशास्त्री सर जार्ज ग्रियर्सन को इतना पसंद आया कि उन्होंने इस ग्रंथ का अंग्रेजी अनुवाद सन् 1980 में बंगाल एशियाटिक सोसायटीज जर्नल में प्रकाशित कराया। हीरालाल जी के सम्मान में उन्होंने लिखा– "An accession to the small band of those who are attempting to throw light on the dark by-ways of Indian Vernaculr."

इस ग्रंथ पर अपनी सम्मति प्रकट करते हुए स्व. लोचन प्रसाद जी पाण्डेय ने लिखा था कि 'इसमें संदेह नहीं कि छत्तीसगढ़ी व्याकरण के इस ग्रंथ ने हीरालाल जी को अमरत्व प्रदान कर दिया है। हीरालाल जी के इस ग्रंथ से सर ग्रियर्सन और डॉ. होर्नल की भारत में बोली जाने वाली भाषाओं और बोलियों के संबंध में अनुसंधान तथा पर्यवेक्षण करने की दिशा मिली।'

हीरालाल जी का छत्तीसबढ़ी व्याकरण ग्रंथ शुष्क व्याकरण मात्र नहीं है। इस ग्रंथ में छत्तीसगढ़ी में व्यवहृत मुहावरों, कहावतों पहेलियों, विशिष्ट अर्थों की अभिव्यक्ति करने वाले शब्द समूहों, लोकगीतों तथा कहानियों तथा ठेठ ग्रामीणजनों द्वारा बोली जाने वाली छत्तीसगढ़ी के उदाहरण भी दिये गये हैं, जिनके कारण ग्रंथ अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गया है। इस ग्रंथ के अंग्रेजी संस्करण का सम्पादन स्व. पं. लोचन प्रसाद जी ने बड़ी योग्यतापूर्वक किया है। हीरालाल जी का व्यक्तित्व मौलिक तथा विभिन्न प्रतिभाओं से सम्पन्न था। हीरालाल जी में छत्तीसगढ़ी और छत्तीसगढ़ी के संबंध में प्रगाढ़ ज्ञान, अनुभव और विद्वत्ता का विचित्र संगम था। गणित के क्षेत्र में उनकी जन्म–जात प्रतिभा थी। वे अच्छे समालोचक भी थे। स्वभाव से वे अत्यंत धार्मिक तथा दानवीर थे। उन्होंने देवी दुर्गा पर नौ सर्गों में 'दुर्योधन' हिन्दी काव्य की रचना की जिसके कारण उन्हें बंगाल संगीत अकादमी द्वारा काव्योपाध्याय की उपाधि से विभूषित किया गया और उन्हें स्वर्णकेयूर प्रदान कर सम्मानित किया गया था। शालोपयोगी गीत पुस्तक लिखने पर बंगाल संगीत अकादमी ने उन्हे पुनः मान पत्र प्रदान कर रजत पदक भेंट की। इस पुस्तक की रचना हीरालाल जी ने बंगाल में प्रचलित भारतीय शास्त्रीय संगीत प्रणाली के अनुसार की थी। हीरालाल जी बहुत बड़े संगीतज्ञ भी थे। हीरालाल ने अपने कुछ कवितायें इटली के मंत्री सिग्नोर कैनिनी को भी भेजी थीं। श्री कैनिनी ने विश्व की सभी सभ्य भाशाओं की चुने हुई कविताओं का इटालियन भाशा में अनुवाद कर संग्रह किया था।

हीरालाल जी की मृत्यु 34 वर्ष की अत्यंत अल्पायु में ही अक्टूबर 1890 में हो गई । यदि उनकी अकाल मृत्यु नहीं होती तो निःसंदेह वे अनेक साहित्यिक कृतियों से छत्तीसगढ़ के गौरव को समृद्ध करते।[4]

5 मध्यप्रदेश के निर्माता :पं. रविशंकर शुक्ल–

स्वाधीनता आंदोलन के संघर्शशील सेनानी , योग्य प्रशासक , राष्ट्रभाषा की उन्नति के लिये सदैव समर्पित तथा नये मध्यप्रदेश के निर्माता के रूप में पं. रविशंकर शुक्ल का नाम इतिहास में स्मरणीय रहेगा। उन्होंने अपनी योग्यता और प्रतिभा के बल पर अपने व्यक्तित्व का इतना विकास किया कि प्रदेश शासन के सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित हो गये।

शुक्ल जी का जन्म सागर में 2 अगस्त 1877 को हुआ था। उनके पिता का नाम पं. जगन्नाथ शुक्ल था । शुक्ल जी की प्रारंभिक शिक्षा सागर में तथा माध्यमिक शिक्षा रायपुर में हुई कानून की पढ़ाई पूरी की ही थी कि शुक्ल जी का खैरागढ़ के हाईस्कूल में प्रधानाध्यापक पद सम्हलाने का आमंत्रण मिला, जिसे उन्होन स्वीकार कर लिया। वे शीघ्र ही लोकप्रीय तथा अत्यंत लोकप्रिय शिक्षक के रूप में विख्यात हो गये। पोलिटिकल एजेंट के अनुरोध पर शुक्ल जी बस्तर तथा कवर्धा रियासतों

Scanned with CamScanner

के युवराजों के ट्यूटर भी नियुक्त हो गये।[5]

6. श्री क्रांतिकुमार भारतीय–

क्रांतिकुमार भारतीय का असली नाम क्या था, यह मुझे भी नहीं मालूम। शायद किसी को नहीं मालूम। रायपुर गजेटिर में उनके पिता का नाम देवकीनन्दन लिखा हुआ है। क्रांतिकुमार का जन्म कलकत्ता में 4 मार्च 1894 को हुआ था। जीवन के अंतिम दिनों में वे स्वामी सरस्वती देव कहलाते थे। उन्होने सन्यास ले लिया था।

क्रांतिकुमार भारतीय का राजनीतिक जीवन दिल्ली में सन् 1919 के 31 मार्च से आरंभ होता है। क्रांतिकुमार भारतीय का संबंध काकोरी के षड़यंत्रकारियों से भी था। वे क्रांतिकारियों के बीच संवादवाहक के रूप में कार्य करते थे। इस काम के लिए उन्हें वेशभूषा भी बदलनी पड़ती थी। जब वे 8–9 वर्ष के थे तब वे अपने भाई के साथ किसी जुलूस में शामिल हुए। जुलूस पर पुलिस ने गोली चलाई। एक गोली उसके भाई को लगी उनके भाई का वहीं प्राणांत हो गया। क्रांतिकुमार इस संसार में अकेले रह गये। उनका जीवन उनका न हो कर देश का हो गया। (नंदकिशोर पांडेय, युगधर्म, रायपुर 15–8–1974)

दिनांक 2 या 3 अगस्त 1930 को बिलासपुर में जिला राजनीतिक परिषद् का आयोजन किया गया था। ठाकुर प्यारेलाल सिंह इस परिशद की अध्यक्षता कर रहे थे। इस परिशद में निर्णय लिया गया कि टाउन हाल पर तिरंगा झांडा फहराया गया और जुलूस निकला। उस जुलूस के आगे–आगे एक युवक तिरंगा झंडा लिए टाउन हाल की ओर बढ़ रहा था। यह क्रांतिकुमार थे। जुलूस को कम्पनी बाग के पास रोक दिया गया। वहां पर सशस्त्र पुलिस तैनात थी। डिप्टी कमिश्नर रागे तथा पुलिस कप्तान कालिन्स वहां डटे थे। जुलूस में षामिल लोग वहीं बैठ गये, लौटे नहीं। पुलिस भी उन्हें रोके खड़ी रही। पता नहीं कब क्रांतिकुमार चुपके से निकल गये और टाउन हाल के ऊपर चढ़कर तिरंगा झंडा फहरा दिया। जब यह समाचार कम्पनी बाग में डटे पुलिस कप्तान को मिला तो उसका गुखड़ा देखने लायक था। इस घटना से सारे शहर में आनंद और आश्चर्य मिश्रित उतेजना फैल गयी। क्रांतिकुमार इस घटना से पष्चात बिलासपुर के युवकों के ह्रदय के स्पन्दन बन गये।

जेल से छुटने के पश्चात क्रांतिकुमार रायपुर आ गए। क्रांतिकुमार जी ने छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय आंदोलन के कार्यक्रमों को संचालित करने में अपनी सारी सामर्थ्य लगा दी। उनके जीवन का एक मात्र मकसद भारत की आजादी थी। सन् 1993 में रामायण–प्रवचन के अपराध में गोंदिया (अब महाराष्ट्र) में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें एक वर्श की सजा हुई। क्रांतिकुमार भारतीय का स्वर बड़ा मधुर था। वे ओजस्वी वक्ता भी थे। वे रामायण की कथा को इस प्रकार प्रस्तुत करने में प्रवीण थे कि लोगों में देश भक्ति की भावना प्रवल हो और वे दासता से मुक्त होने के लिए संघर्श के लिए तत्पर हो। क्रांति कुमार की रामायण कथा को सुनने के लिए हजारों की भीड़ एकत्र होती थी। यह रामायण के ऐसे कथा–प्रसंगों की व्याख्या करते थे जो जनता में चेतना और गुलामी तथा अन्याय से सतत् संघर्ष की प्रेरणा देती थी। रामायण का आजादी के हथियार के रूप में ऐसे अद्भूत प्रयोग उनके बुद्धि कौशल का प्रमाण था। संभवतः इस क्षेत्र में वे अकेले व्यक्ति थे जिन्हें रामायण के प्रवचन के अपराध में दण्ड दिया गया। गोंदिया जेल से छुटने के पश्चात् उन्हें जबलपुर में गिरफ्तार कर पुनः एक वर्श तक जेल में रखा गया। सन् 1934 में मूलताई (बैतुल) में गिरफ्तार किया गया और उन्हें 4 वर्षों की सजा दी गई।

सन् 1938 में वे पुनः रायपुर आ गए। वे रायपुर में ब्राम्हणपारा में नन्द किशोर पाण्डेय एडव्होकेट के यहाँ ठहरते थे। वैसे वे अधिक समय तक एक ही स्थान पर ठहरते नहीं थे। उनके ह्रदय में देश प्रेम की ज्वाला निरंतर प्रज्वलित होती रहती थी। वे खाली बैठ नहीं सकते थे। आजादी के लिए वे हर क्षण बेचैन रहते थे। सन् 1974 में यह महान तेजस्वी ज्योतिपूंज अस्त हो गया।[6]

विभिन्न साहित्यकारों ने अपने साहित्यों के माध्यम से राष्ट्रीय जागरण में योगदान दिया है। उपर्युक्त साहित्यकारों के अतिरिक्त घनश्याम सिंह गुप्त, ठाकुर जगमोहन सिंह, हीरालाल उपाध्याय, बलदेव प्रसाद मिश्र, भगवान दास शर्मा आदि साहित्यकारों ने भी छत्तीसगढ़ के राष्ट्रीय जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत की है।

संदर्भग्रंथ सूची

1. छत्तीसगढ़ का समग्र इतिहास– सुरेश चन्द्र शुक्ल पृष्ठ 77 पृष्ठ 81
2. हमारा छत्तीसगढ़ (कक्षा आठवीं) संरक्षक अवध विहारी दुवे संपादक आर.सी पाण्डव पृष्ठ 75 पृष्ठ 76
3. छत्तीसगढ़ की साहित्य और उसके साहित्यकार डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त पृष्ठ 35 पृष्ठ 36
4. छत्तीसगढ़ वृहद संदर्भ डॉ. संजय त्रिपाठी एवं श्रीमती चंदना त्रिपाठी मुद्रक उपकार प्रकाशन आगरा भाग पृष्ठ 131 पृष्ठ 132
5. छत्तीसगढ़ दिग्दर्शन (भाग दो) मदन लाल गुप्ता पृष्ठ 151 पृष्ठ 152
6. छत्तीसगढ़ का राजनीतिक इतिहास श्री पी. अरविंद शर्मा पृष्ठ 180 पृष्ठ 181

Scanned with CamScanner